

टॉप 5 ब्रांच में अभी तक सबसे कम एडमिशन, लड़कों के मुकाबले 5% से भी कम एनरोलमेंट

इंजीनियरिंग में एक हजार का आंकड़ा भी नहीं छू पाई गल्स

पुष्पेन्द्र शर्मा

जयपुर • टेक्निकल एजुकेशन में गल्स का रेशो बढ़ाने के लिए सरकार की तमाम कोशिशें नाकाम साबित होती जा रही हैं। इंजीनियरिंग में इस बार एडमिशन के आंकड़े इस हकीकत को बयां कर रहे हैं। राजस्थान टेक्निकल यूनिवर्सिटी (आरटीयू) के 130 इंजीनियरिंग कॉलेजों में अभी तक हुए अलॉटमेंट में गल्स का रुझान बेहद कम नजर आया है। राजस्थान इंजीनियरिंग एडमिशन प्रोसेस (रीप) के तहत अभी एडमिशन की प्रक्रिया अंतिम दौर में है। आरटीयू से मिले आंकड़ों के अनुसार गल्स का रेशो चौंकाने वाला है।

सिविल नंबर 2 पर

आरटीयू की टॉप ब्रांच में कई ऐसी हैं, जिनमें दहाई का आंकड़ा भी पार नहीं हो पाया है। स्टूडेंट्स की टॉप चॉइस में रहने वाली कम्प्यूटर साइंस ब्रांच की हजारों सीटों में से सिर्फ 316 गल्स ने ही एडमिशन लिया है। हालांकि अक्सर गल्स की चॉइस में न रहने वाली सिविल ब्रांच में आंकड़ा चौकाता है, लेकिन बायज की तुलना में इसमें काफी कम गल्स ने एडमिशन लिया है। सिविल में 180 गल्स का अलॉटमेंट हुआ है। इसके बावजूद गल्स की चॉइस में सिविल दूसरे स्थान पर है। आईटी, इलेक्ट्रिकल और मैकेनिकल जैसी ब्रांचों में 100 से भी कम गल्स ने एडमिशन लिया है।

आरटीयू

130 इंजीनियरिंग कॉलेजों में 13 हजार से ज्यादा अलॉटमेंट

800 से भी कम गल्स ने लिया एडमिशन

70,000

ट्यूशन फीस माफ करने जैसी स्कॉलरशिप योजना से भी नहीं बढ़ा रुझान



आंकड़े...

कम्प्यूटर साइंस	316
मैकेनिकल	78
सिविल	180
आईटी	98
इलेक्ट्रिकल	70

सरकार की योजनाओं से भी नहीं बढ़ा रुझान

खास बात यह है कि राज्य सरकार ने गल्स एजुकेशन के लिए कई योजनाएं चला रखी हैं। इनमें एससी, एसटी, ओबीसी और एसबीसी गल्स के लिए स्कॉलरशिप योजना का प्रावधान है। इंजीनियरिंग में एडमिशन लेने वाली गल्स की पूरी ट्यूशन फीस (लगभग 70 हजार रुपए) माफ की जा सकती है। समाज कल्याण विभाग से लिंक कर

इस योजना को चलाया जा रहा है। इसके अलावा 12वीं में 75 प्रतिशत से ज्यादा अंक हासिल करने वाली गल्स के लिए स्कूटी योजना भी शुरू की गई है। इसके अलावा कॉलेज भी अपने स्तर पर कई सुविधाओं में बढ़ोतरी कर रहे हैं, लेकिन इसके बावजूद गल्स का रुझान दिखाई नहीं दे रहा है। यह इंजीनियरिंग एजुकेशन पर सवाल खड़ा करता है।

सरकार की कई योजनाओं के बावजूद इंजीनियरिंग में गल्स का रुझान नहीं बढ़ पा रहा है। हालांकि इंजीनियरिंग का ट्रेंड ही कमजोर है, उसमें भी गल्स लगातार कम होती जा रही हैं। लेकिन रिस्कल डवलपमेंट में रुझान बढ़ रहा है।

किरण माहेश्वरी, उच्च एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री

रोजगार ने रोकी राह

आरटीयू के पूर्व वीसी प्रो. आर.पी. यादव का कहना है कि सरकारी और प्राइवेट कंपनियों में रोजगार नहीं मिल पाना, रुझान घटने की एक वजह हो सकती है। मिडिल क्लास फैमिलीज का मोटा पैसा इंजीनियरिंग में खर्च होता है। ऐसे में वे रोजगार न होने के कारण बीएड जैसी एजुकेशन कराना ज्यादा पसंद कर रहे हैं। सरकारी और प्राइवेट कंपनियों में कुछ साल पहले रोजगार थे, तब गल्स ने बड़ी संख्या में एडमिशन लिया था। 2012-13 में तो 7-8 हजार गल्स का आंकड़ा पहुंच गया था। जयपुर में किसी भी बड़ी आईटी कंपनी का स्टेबलिश न होना, अवसर न बढ़ना और दूसरी मेट्रो सिटीज में बेहतर विकल्प मौजूद होना हमारे यहां इंजीनियरिंग में गल्स का रुझान कम होने के कारण हैं। इसके लिए अवसर बढ़ाने का तरीका निकाला जाना चाहिए। इसके लिए सरकार को जमीनी स्तर पर काम करने की जरूरत है।